अर्जुन उवाच।

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।

इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन।।४।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **कथम्**=किस प्रकार; **भीष्मम्**=भीष्म का; **अहम्**=मैं; **संख्ये**=युद्ध में; **द्रोणम्**=द्रोण का; **च**=तथा; **मधुसूदन**=हे कृष्ण; **इषुभिः**=बाणों से; **प्रतियोत्स्यामि**=विरोध करूँगा; **पूजा अर्हौ**=पूज्य; **अरिसूदन**=हे अरिहन्ता।

अनुवाद

अर्जुन ने कहा, हे मधुसूदन श्रीकृष्ण ! मैं रणभूमि में भीष्म और द्रोणाचार्य आदि का किस प्रकार बाणों से विरोध कर सकता हूँ, क्योंकि ये दोनों ही मेरे पूज्य हैं।।४।।

तात्पर्य

पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण आदि आदरणीय वयोवृद्ध महानुभाव नित्य पूज्यास्पद हैं। अतएव उनके आक्रमण करने पर भी विरोध करना उचित नहीं। वृद्धों से वाचिक तर्क तक न करना सामान्य शिष्टाचार है। उनके निष्ठुर व्यवहार का भी निर्मम प्रतिकार उचित नहीं होता। तब अर्जुन के लिए उन पर प्रत्याक्रमण करना किस प्रकार सम्भव हो सकता है? क्या श्रीकृष्ण स्वयं अपने पितामह उग्रसेन अथवा गुरु सान्दीपनि मुनि पर आक्रमण कर सकते हैं? इस प्रकार अर्जुन ने श्रीकृष्ण के समक्ष युद्ध करने के विरुद्ध अनेक तर्क उपस्थित किये।

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्

श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।

हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव

भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान्।।५।।

गुरून्=गुरुजनों को; **अहत्वा**=न मार कर; **हि**=निश्चित रूप से; **महानुभावान्**=महानुभाव; **श्रेयः**=कल्याणकारी; **भोक्तुम्**=भोगना; **भैक्ष्यम्**=भिक्षा का अन्न; **अपि**=भी; **इह**=इस; **लोके**=इस लोक में; **हत्वा**=मारकर; **अर्थ**=लाभ; **कामान्**=मनोरथ; **तु**=तो; **गुरून्**=गुरुजनों को; **इह**=इस संसार में; **एव**=ही; **भुञ्जीय**=भोगूँगा; **भोगान्**=भोगों को; **रुधिर**=रक्त से; **प्रदिग्धान्**=कलंकित हुए।

अनुवाद

गुरुजनों का वध करके जीवित रहने की अपेक्षा तो इस संसार में भिक्षा-वृत्ति से जीवनयापन करना अधिक श्रेयस्कर होगा। अर्थलोलुप होने पर भी ये महानुभाव वरिष्ठ हैं। इनकी हत्या करने से हमारे भोग भी रुधिर से कलंकित हो जायेंगे।।५।।

तात्पर्य

शास्त्र के अनुसार, जो विवेकशून्य गुरु निन्द्य कर्म में प्रवृत्त हो उसका निःसंकोच त्याग कर देना चाहिए। दुर्योधन से प्राप्त आर्थिक सहायता के आधार पर भीष्म एवं द्रोण लौकिक दृष्टि से उसका पक्ष ग्रहण करने को विवश थे। फिर भी केवल आर्थिक